ख्वाबों की उड़ान

लघु नाटिका

मन्दाकिनी शुक्ला, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, जगदीशपुर, कक्षा: 9 ए

मुख्य पात्र:
1)कृतिका, 2)दादा जी, 3)माता - पिता

कथा: उत्तर प्रदेश के हलचल भरे शहर में, कृतिका नाम की एक लड़की रहती थी। वह बारहवीं कक्षा की छात्रा थी और अपने स्कूल की सबसे प्रतिभाशाली छात्रा थी। उसके माता-पिता और शिक्षकों को उससे बहुत उम्मीदें थीं। यह नाटक समाज की उन उम्मीदों को दर्शाती है जो बच्चों से की जाती हैं, क्या इतनी उम्मीदें भी रखना सही है?

संकल्पना: बारहवीं की परीक्षा समाप्त होने के बाद, कृतिका ने स्कूल जाना बंद कर दिया था और उसके परिणाम आने वाले थे। वह जानती थी कि उसके माता-पिता चाहते हैं कि वह गणित या इंजीनियरिंग में करिअर बनाए लेकिन उसका असली जुनून लेखन में था।

दृश्य 1: पार्क में

कृतिका स्कूल से घर लौट रही थी। उसने पार्क में अपने पड़ोसी दादा जी को बैठे देखा। दादा जी शांत और समझदार थे। कृतिका ने उनसे बातचीत की और अपने दिल की बात साझा करनी की ठानी।

कृतिका: ''नमस्ते दादा जी, क्या मैं यहाँ बैठ सकती हूँ?''

दादा जी: ''बिल्कुल, बेटी। कैसी हो?''

कृतिका: ''मैं ठीक हूँ, लेकिन कुछ परेशान हूँ।''

दादा जी:''क्या बात है?''

कृतिका: ''मेरे माता-पिता चाहते हैं कि मैं गणित या इंजीनियरिंग में करिअर बनाऊँ लेकिन मेरा असली जुनून लेखन में है।''

दादा जी: ''बेटी, सच्ची खुशी अपने दिल की सुनने में ही मिलती है। तुम अपने माता-पिता से बात करो और अपने दिल की बात उन्हें बताओ।''

दृश्य 2: कृतिका का घर

कृतिका ने साहस जुटाया और अपने माता-पिता से बात करने का निर्णय लिया।

कृतिका: ''माँ, पापा, मुझे आपसे कुछ महत्वपूर्ण बात करनी है।''

माँ: ''क्या हुआ बेटा?''

कृतिका: ''मैं जानती हूँ कि आप चाहते हैं कि मैं गणित या इंजीनियरिंग में करिअर बनाऊँ लेकिन मुझे लेखन बहुत पसंद है।''

पापा: ''लेखन? पर यह तुम्हारे भविष्य के लिए अच्छा नहीं है।''

कृतिका: ''पापा, मैंने बहुत सोच-समझकर यह निर्णय लिया है। मैं अपनी पूरी मेहनत और दिल से लिखना चाहती हूँ। अगर मैं वह करूँ जो मेरा दिल कहता है तो मैं न केवल सफल होऊँगी बल्कि खुश भी रहूँगी। मुझे एक मौका दें, मैं आपको निराश नहीं करूंगी।''

माँ: (थोड़ा कठोरता से) ''हम अभी इस पर बात नहीं करेंगे। तुम्हें पहले बारहवीं के परिणाम पर ध्यान देना चाहिए।''

कृतिका निराश है लेकिन उसने हार नहीं मानी।

दृश्य 3: कृतिका का कमरा

कृतिका ने इन्हीं सब परिस्तिथियो में अपना पहला उपन्यास लिख डाला और उसका शीर्षक दिया 'ख्वाबों की उड़ान'। उसके दोस्तों ने उसका समर्थन किया और साथ मिलकर उसे प्रकाशित करने में मदद की ।

सीमा: कृतिका कब तुम्हारे माता-पिता को समझ आएगा तुम्हारी मेहनत तुम्हारे सपनो के बारे में?

कृतिका: बस इसी बात का इंतजार है कब वे समझेंगे!

कई हफ्तों की मेहनत के बाद, कृतिका की किताब 'ख्वाबों की उड़ान' गुप्त रूप से प्रकाशित हो गई और उसे बहुत प्रशंसा मिली।

दृश्य 4: कृतिका का घर

कृतिका अपने माता-पिता को एक पत्र लिखती है जिसमें उसकी किताब के बारे में लिखा था।

पापा: ''यह क्या है? कृतिका ने किताब लिखी और प्रकाशित की?''

माँ: ''चलो, उससे बात करते हैं।''

दृश्य 5: कृतिका का कमरा

पापा:''कृतिका, यह तुम्हारी किताब है?

कृतिका: (साहस जुटाकर) ''हाँ पापा, मैंने और मेरे दोस्तों ने मिलकर इसे गुप्त रूप से प्रकाशित किया है। मुझे विश्वास था कि यह सफल होगी।''

माँ: (मुस्कराते हुए) ''हमें तुम पर गर्व है। तुमने जो किया, वह वास्तव में अद्भुत है।''

पापा: ''हम समझ गए हैं कि तुम्हारा असली जुनून क्या है! हमें अफसोस है कि हम तुम्हारी काबिलियत समझ नहीं पाए!''

दृश्य 6: स्कूल का मंच

स्कूल में एक कार्यक्रम हो रहा है, जहाँ कृतिका को सम्मानित किया जा रहा है।

प्रधानाचार्या: ''हमें गर्व है कि कृतिका ने अपनी किताब 'ख्वाबों की उड़ान' से हमें गौरवान्वित किया है। इतनी छोटी उम्र में यह इसकी अद्वितीय उपलब्धि है।''

(कृतिका मुस्कराते हुए मंच पर जाती है और सम्मान प्राप्त करती है।)

अंतिम दृश्य: कृतिका का कमरा

कृतिका बैठी है , उसके पास उसकी किताब रखी है। वह संतोष और खुशी से भरी है।

कृतिका : (मुस्कराते हुए) ''अंतत:, सच्ची खुशी वही होती है जो आपका दिल चाहता है और जो आप चाहते है!'' जी दी

डायरी लेखन

घर की खामोशी में छुपा प्यार

अलवीना परवेज, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, नौएडा, कक्षा 10 एफ

18 मई, 2024

प्यारी डायरी,

आज रात घर बहुत बड़ा लग रहा है। आमतौर पर दरवाज़े की चरमराहट और पुरानी पाइपों की घरघराहट मामूली आवाज़ें होती हैं लेकिन आज रात, हर आवाज तेज हो गई हैं, खालीपन में गूँज रही है। माँ और पापा अभी-अभी आगरा के अपने वीकेंड ट्रिप पर निकले हैं। उन्होंने वादा किया था कि कल शाम तक वापस आ जाएँगे लेकिन यह जानने के बाद भी मेरी बेचैनी कम नहीं हो रही। यह बचपना लगता है, मुझे पता है। मैं अब आठ साल की नहीं हूँ, जो माता-पिता से सहारे के लिए चिपकी रहूँ। फिर भी, मैं यहाँ हूँ, हर घंटे उनकी आवाज सुनने के लिए अपना फोन पकड़ने का लालच कर रही हूँ।

एक पल, मैं बहुत आज़ाद महसूस करती हूँ, अपने खुद के फैसले लेने की आजादी का मज़ा लेती हूँ, अगले ही पल, मैं उनकी मौजूदगी के सुकून के लिए तरसती हूँ, जो मेरी सुरक्षा का प्रतीक हैं।

मुझे वो अनगिनत रातें साफ-साफ याद हैं, जो मैंने उनके बीच सो कर बिताई थीं, किसी बुरे सपने या घुटने की चोट से राहत पाने की कोशिश में। उनकी आवाजें, एक सुखदायक मरहम जैसी थीं, जो किसी भी डर को दूर कर देती थीं। उनका मुझे गले लगाना दुनिया की अनिश्चितताओं के खिलाफ एक कवच था।

अब, घर की खामोशी मुझ पर दबाव डालने वाले वजन की तरह लगती है। यह सिर्फ उनकी बातचीत या ताज़े पकाए हुए खाने की जानी-पहचानी खुशबू की कमी नहीं है। यह गायब हो चुका आश्वासन है, ये ज्ञान कि वे बस एक पुकार दूर हैं, सुनने के लिए, मार्गदर्शन करने के लिए, बस वहाँ रहने के लिए तैयार हैं।

मुझे याद आती है जिस तरह से माँ शनिवार की सुबह रसोई में घूमती थीं। मुझे पापा की हँसी की आवाज याद आती है जो लिविंग रूम में अखबार पढ़ते हुए गूँजती थी। ये रोज़मर्रा के पल, जो कभी मामूली थे, अब एक नया महत्व रखते हैं। शायद यह एक संकेत है कि मुझे इन पलों को संजोना चाहिए, समय के इन चुराए हुए टुकड़ों को, जब तक मैं कर सकती हूँ। वह समय आ सकता है जब उनके वीकेंड ट्रिप स्थायी विदाई बन जाएँ, जब उनकी मौजूदगी एक निरंतरता से एक यादगार स्मृति में बदल जाए।

उन्हें फोन करने की इच्छा फिर से उठती है, लेकिन मैं खुद को फोन नीचे रखने के लिए मजबूर करती हूँ। इसके बजाय, मैं उन पुराने फोटो अल्बमों को निकालूँगी, जो हमारे पारिवारिक छुट्टियों और घर वापसी की तस्वीरों से भरे हुए हैं। धुंधली यादों में मुस्कुराते हुए, मैं उनके होने का अहसास अपने दिमाग में फिर से जगाऊँगी, कल उनके वापस आने तक ये एक छोटा सा सुकून होगा।

शायद तब घर इतना खाली नहीं लगेगा और इस खामोश कमरे में एक अलग सा भारीपन होगा, कृतज्ञता का बोझ, प्यार का बोझ और ये मीठा-सा ग़म कि भले ही वो हमेशा शारीरिक रूप से मौजूद न हों, उनका प्यार ज़िंदगी के इस लगातार बदलते समुद्र में एक मज़बूत सहारा बना रहेगा।

तुम्हारी प्यारी।

कविता

संभल जाओ ऐ दुनिया वालो

कनिष्क शर्मा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, ग्वालियर, कक्षा, 8

संभल जाओ ऐ दुनिया वालो
वसुंधरा पे करो घातक प्रहार नहीं!
रब करता आगाह हर पल
प्रकृति पर करो घोर अत्यचार नहीं!!

लगा बारूद पहाड़, पर्वत उड़ाए
स्थल रमणीय सघन रहा नहीं !
खोद रहा खुद इंसान कब्र अपनी
जैसे जीवन की अब परवाह नहीं!!

लुप्त हुए अब झील और झरने
वन्यजीवो को मिला मुकाम नहीं!
मिटा रहा खुद जीवन के अवयव
धरा पर बचा जीव का आधार नहीं!!

नष्ट किये हमने हरे भरे वृक्ष,लताये
दिखे कही हरयाली का अब नाम नहीं!
लहलाते थे कभी वृक्ष हर आँगन में
बचा शेष उन गलियारों का श्रृंगार नहीं!

कहा गए हंस और कोयल, गोरैया
गौ माता का घरो में स्थान रहा नहीं!
जहाँ बहती थी कभी दूध की नदिया
कुंए,नलकूपों में जल का नाम नहीं!!

तबाह हो रहा सब कुछ निश दिन
आनंद के आलावा कुछ याद नहीं
नित नए साधन की खोज में
पर्यावरण का किसी को रहा ध्यान नहीं!!

विलासिता से शिथिलता खरीदी
करता ईश पर कोई विश्वास नहीं!
भूल गए पाठ सब रामयण गीता के,
कुरान,बाइबिल किसी को याद नहीं!!

त्याग रहे नित संस्कार अपने
बुजुर्गो को मिलता सम्मान नहीं!
देवो की इस पावन धरती पर
बचा धर्म-कर्म का अब नाम नहीं!!